केवल निजी वितरण के लिए

जनवरी २०११ भाग ४, अंक १

श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY
2011

नव वर्ष की शुभकामनाएं

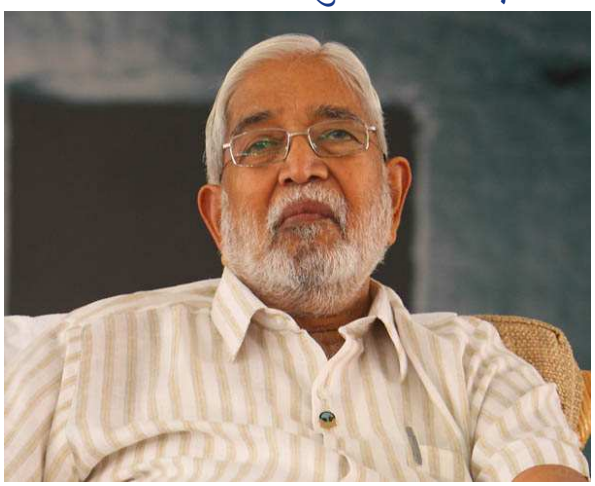

जैसे जैसे वर्ष २०१० खत्म होने जा रहा था, मालिक के सान्निध्य में रहने के लिये अभ्यासियों की संख्या मणपक्कम आश्रम में बढ़ती ही जा रही थी। यह समय पुरानी जमापूंजी की गणना करने और, जिसमें हमारे लिये अनगिनत अवसर भरे दिन हैं और मालिक हमें जैसा बनाना चाहते हैं वैसा बनने के लिये बदलाव के अवसर हैं, ऐसे नये साल के स्वागत की तैयारिओं का था। आश्रम रौशनी से भरा हुआ था और अभ्यासियों को एक दूसरे को शुभकामनाएं देने का अवसर भी मिला।

मालिक जल्दी उठकर तैयार हो गये थे और उन्हें शुभकामनायें देने आये अभ्यासियों से मिल रहे थे। १ जनवरी २०११ को लगभग ७००० अभ्यासी सुबह के सत्संग में शामिल हुए। भाई पी. आर. कृष्णा ने एक संक्षिप्त वार्ता दी और उसके बाद मालिक ने संगीतकार भाई कुमरेश और बहन जयंती को सम्मानित किया।

दिवाली

गुरुदेव मणपाक्कम में थे और करीब १००० अभ्यासी दिवाली के अवसर पर उनके साथ रहने के लिये आ पहुंचे। नवम्बर ५ तारीख को दिवाली थी और उसे बड़े धूम धाम और हर्षोल्लास के साथ आश्रम में मनाया गया। गुरुदेव ने सवेरे पूजा करवाई और हमारे दिलों में प्रेम की ज्योति जलाई।

गुरुदेव के भवन को रंगोली एवं दियों से बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था। नवम्बर १० तारीख को गुरुदेव ने मणपाक्कम आश्रम में १५ युगलों का विवाह सम्पन्न किया। बड़े उत्साह के साथ उन्होंने कुछ नवविवाहित दम्पतियों को सलाह दी कि उन्होंने जो आध्यात्मिक विवाह का गांठ बान्धी है, उसे वे कभी न छुड़ाएँ।

हैदराबाद – ११ से १८ नवम्बर

११ तारीख की सुबह हैदराबाद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचते ही गुरुदेव वहां से करीब २० कि.मी. की दूरी पर स्थित 'कान्हा शान्ति वनम' प्रोजेक्ट की ओर निकल पड़े। वे थके से नज़र आ रहे थे परन्तु बडी प्रसन्नता के साथ उन्होंने पेड़ के इर्द गिर्द बनाये गये कुटीर में प्रवेश किया। जब किसी ने उस जगह की प्रशंसा की तब गुरुदेव ने कहा कि जो हम देख रहे हैं वह केवल 'पालने के राम' हुए। इससे हमे यह संकेत मिला कि आनेवाले दिनों में अभी बहुत भव्य काम बाकी हैं। उन्होंने अपने पुराने मित्र श्री डी. एस. राव के साथ, जिनसे वे अपने कालेज के दिनों से परिचित थे और जो इन दिनों हैदराबाद में रहते हैं, दोपहर का भोजन किया। गुरुदेव और श्री डी. एस. राव का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के किस्से याद करना, उधर उपस्थित लोगों के लिये आनन्ददायी था। शाम को वे किसी स्थानीय अभ्यासी के घर चले गये।

अगले दिन गुरुदेव तुमकुंठा आये और उनकी प्रतिक्षा करनेवाले अभ्यासीगण एवं बच्चों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। शाम के ५ बजे उन्होंने आंध्र प्रदेश के विभिन्न भागों से आए करीबन ५००० अभ्यासियों के लिए सत्संग का संचलन किया।

शनिवार के दिन गुरुदेव शीघ्र ही उठ गये और झूले में जा बैठे जिसे देखकर वहां सुबह से ही उनकी प्रतीक्षा करते हुए उपस्थित अभ्यासीगण अत्यन्त प्रसन्न हुए। तत्पश्चात जब वे ध्यान कक्ष की ओर जा रहे थे, एक युवा अभ्यासी बहन ने उनका अभिनन्दन करते हुए कहा, "मालिक, आपका दिन अच्छा हो !" तब गुरुदेव ने उसे देखकर कहा, "नहीं, मैं तो तुम्हारा दिन अच्छा बनाने आया हूँ"। ९ बजे के सत्संग के बाद जब अभ्यासियों ने उनका अभिनन्दन किया तब उन्होंने कहा कि वे उनके आध्यात्मिक स्वास्थ्य के बारे में खबर ले रहे थे। उन्होंने सलाह दी कि अभ्यासी अपने आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ख्याल हमेशा रखें और उसकी परवरिश करें।

गुरुदेव ने करीब ५५०० अभ्यासियों को रविवार की पूजा करवाई। ध्यान कक्ष से निकलने से पहले उन्होंने एक वृद्ध अभ्यासी से, जो हाल ही में

बीमार रहे, उनका हाल पूछा। उनकी अनुकम्पा और प्रेम हम सब के हृदय को छू गये। गुरुदेव ने उनसे कहा कि ज्यूं-ज्यूं उम्र बढ़ती है, आत्म-नियन्त्रण एवं शिष्टाचार की आवश्यकता बढ़ती है ।

कई माताएं तथा गर्भवती महिलाएं गुरुदेव का आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए पंक्तिबद्ध खड़ी थीं। उनमें से एक महिला को गुरुदेव ने कहा, "एक स्वस्थ सहजमार्गी बच्चे को इस दुनियां में लाओ। उस बच्चे को जन्म देने के बाद उस पर अपनाा दावा मत करना। याद रखना कि वह सहजमार्ग का बच्चा है।"

गुरुदेव ने कुछ समय उन बच्चों के साथ बिताया जो बाल वर्ष के अवसर पर उन्हें बधाई देने के लिये सुबह से गजब के अनुशासन के साथ शांत भाव से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने उन बच्चों से कहा, "याद रखो, तुम हमेशा सहजमार्ग के बच्चे हो। प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम करो। प्रेम के साथ फलो फूलो। अपने अभिभावकों और बड़ों का कहना मानो। बाबू जी महाराज आप सब को आर्शीवाद दें।"

सोमवार १५ नवम्बर को प्रातः गुरुदेव ने एक अभ्यासी की कंपनी के नए परिसर में सत्संग करवाया। इसके बाद उन्होंने दोमाल गुडा आश्रम के लिए प्रस्थान किया और जैसे ही उन्होंने आश्रम में प्रवेश किया तो बाबू जी महाराज के उस चित्र के पास कुछ क्षण खडे रहे, जो मई, १९६७ में दोमाल गुडा आश्रम के उद्घाटन करते हुए खींचा गया था। इसके बाद उन्होंने ५०० से अधिक अभ्यासियों के लिए सत्संग किया।

शहर के उत्तरी हिस्से में ज़ोनल आश्रम तथा दक्षिणी हिस्से में कान्हा प्रोजेक्ट स्थल की वजह से दोमालगुडा हमारे गुरुदेव की भावी यात्राओं के लिए एक विश्राम स्थल का काम करेगा। गुरुदेव ने सहजभाव से ज़ोनल आश्रम को उत्तर कैलाश और कान्हा प्रोजेक्ट को दक्षिण कैलाश और दोमालगुडा को मध्य कैलाश का नाम दिया।

उन्होंने कान्हा प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही एक टीम से मुलाकात की तथा कुछ नक्शों की समीक्षा की। जब उन्हें पहला नक्शा दिखाया गया जो उनकी सोच के अनुसार था तो वे बहुत प्रसन्न नजर आए। उन्होंने कहा, "देखा आपने, प्रकृति किस प्रकार उच्चतर उद्देश्य के लिए स्वयं को तैयार करती है।" इसके बाद गुरुदेव ने टुमकुंठा आश्रम के लिए प्रस्थान किया जहां वे सायं ४ बजे पहुंचे।

१६ तारीख को दोपहर में बादल घिर आए और हल्की बूंदाबांदी हुई। गुरुदेव झूले में बैठे और पूछा कि कैंटीन में क्या बन रहा है। किसी ने नाश्ता लाकर दिया जिसे गुरुदेव ने चखा और उसे गेट के बाहर हल्की बूंदाबांदी में खड़े हुए अभ्यासियों में वितरित करने के लिए कहा।

भारतीय वायुसेना में कार्य करने वाले अभ्यासियों का एक समूह शाम को गुरुदेव से मिलने आया। उन्हें देखकर गुरुदेव को प्रसन्नता हुई। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, "आसमान में जिन्हें उड़ने की आदत है, क्या वे लोग नीचे बैठेगें?" और उन्होंने काँटेज के भीतर उन्हें सिटिंग दी।

१७ तारीख को बकरीद की छुट्टी होने के कारण अभ्यासियों की संख्या बढ़ गई। गुरुदेव ने प्रातः ९ बजे सत्संग कराया और हैदराबाद से आए एक जोड़े की सगाई करवाई। भाई चक्रपाणी ने एक जबरदस्त वार्ता दी जिसमें उन्होंने कहा कि हमें 'जाने दो' की भावना अपनाने का प्रयास करना चाहिए; उन्होंने न्यासी की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता का खुलासा किया। शाम के सत्संग के बाद बहन सौम्या और चिल्ड्रन सेंटर के पांच नन्हें मुन्नों की टीम ने भारतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया जिसे गुरुदेव ने अपने कॉटेज से देखा।

१८ तारीख को गुरुदेव लोगों से मुलाकात करने, सीटिंग देने और कम्प्यूटर पर काम करने में व्यस्त रहे। सभी को स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि सरदर्द के बाबजूद भी इच्छा शक्ति के बल पर वे कार्य कर रहे थे। दोपहर २.३० बजे उन्होंने चेन्नई के लिए प्रस्थान किया।

एशियाई सेमिनार

चीन, हाँगकाँग, इंडोनेशिया, जपान, कोरिया, मकाऊ, नेपाल, फ़िलिपाइन्स, श्रीलंका, तैवान, थायलंड और व्हिएतनाम से करीब २५० अभ्यासियों का एक सेमिनार २९ नवम्बर से ३ दिसम्बर, २०१० तक मणपाक्कम में आयोजित किया गया। सेमिनार के दरम्यान भाई पी. आर. कृष्णा, भाई चक्रपाणी, बहन श्रीमती राठोड एवं भाई एन प्रकाश ने वार्ताएं दी। २८ नवम्बर के दिन गुरुदेव ने ऐलान किया कि भारत के बाहर एशिया का पहला आश्रम मलेशिया में बनेगा।

गुरुदेव ने समारोह के उद्घाटन के समय अपनी वार्ता में कहा, "बाबूजी कहते हैं कि आपके अंदर मैं कुछ भी परिवर्तन ला सकता हूं – उच्चतम, अत्यंत उज्जवल और प्रकाशमय, सामरसपूर्वक एवं प्यारभरा। बाहरी दुनिया से जूझना आपका काम है। आपमें इच्छाशक्ति एवं बुद्दी कि शक्ति है जो मानव को अनोखा वरदान है...केवल 'उनकी' बातों को सुनो, जो भी देखना है केवल 'उनकों' ही देखो,

जनवरी २०११ भाग ४, अंक १
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया समाचार-पत्र

केवल उनके ही कथनानुसार चलो; उनपर से नज़र कभी मत हटाना। उनका अनुकरण करो। अनजाने में ही, एक मां की बाहों में बसा बच्चा जैसे उसके साथ साथ अपने को भी वहां पहुंचते पाता है, तुम भी वहाँ पहुँचोगे।

गुरुदेव ने अभ्यासियों के साथ अनौपचारिक रीत से कुछ समय गुज़ारा। उन्होंने नये अभ्यासियों को पहले ही दिन आकर उनसे मिलने के लिये कहा। चीनी अभ्यासीयों को बहुत सारे प्रश्न थे और गुरुदेव ने उन सभी का धैर्यपूर्वक जबाव दिया। एक अनुवादक भी वहां था। थोड़ी देर बाद अनुवादक अनुवाद पूरा कर पाता उससे पहले ही गुरुदेव जवाब दे देते। आश्चर्यजनक बात यह थी कि जो अभ्यासी केवल चीनी भाषा जानते थे, अंग्रेजी नहीं जानते थे वे भी उनकी बात को समझते हुए अपना सिर हिला रहे थे।

चीन से आए एक अभ्यासी ने गुरुदेव से चीन में सहजमार्ग का अभ्यास करने के बारे में पूछा क्योंकि वहां पर लोगों ने सहजमार्ग को अभी अपनाया नहीं है। गुरुदेव ने जवाब दिया कि लोगों को आकर्षित करने के लिए स्वयं को आदर्श बनना होगा और साथ ही उन्होंने कहा कि चिंता करने या डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

वे विविध देशों से आये ५८ प्रशिक्षकों से मिले और प्रशिक्षकों के कार्यसंबन्धी प्रश्नों के उत्तर दिये। उनके कार्यालय में टी वी पर प्रसारित किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रमों को उन्होंने देखा।

२० मिनट का समयसूची चलचित्र दिखाया गया जो बाबूजी की सिंगापूर और मलेशिया की यात्रा एवं गुरुदेव की सिंगापूर, मलेशिया, जापान और चीन की यात्रा के बारे में था। गुरुदेव ने बताया कि हर क्षेत्र को ऐसा चलचित्र प्रस्तुत करना चाहिये।

गुरुदेव ने ३ दिसंबर को सत्संग करवाया जिसके बाद समापन वार्ता दी। सीखने के काबिल बहुत विषय थे खासकर फ्रांसी-चीनी अदल-बदल कार्यक्रम से और हर केन्द्र में गत वर्षों में संपन्न किये गये कार्यक्रमों के ब्यौरों से। ऐसे कई नये विचारों और स्नेहपूर्ण हृदयों के माध्यम से सेमिनार में आये हर हिस्सेदार को मानो नया प्रोत्साहन मिला हो और मन में एक संकल्प उठा हो, की अपने देश जाकर मिशन के लिये और उत्साह के साथ काम करेंगे।

बाढ़ का खतरा

भारी बरसात की वजह से मणपाक्कम, मुगलीवाक्कम तथा गौरीनगर के निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा पैदा हो गया था। इन इलाकों के आसपास रहने वाले हमारे कुछ अभ्यासियों के घरों में पानी आ गया था। गुरुदेव ने सभी को आश्रम खाली करने की सलाह दी तथा बाहर से आने वाले सभी अभ्यासियों को मणपाक्कम आश्रम आने की अपनी यात्रा को रद्द करने का अनुरोध किया। बरसात बंद होने और बाढ़ का खतरा टलने तक आश्रम बंद रहा। इस संकट के दौरान गुरुदेव का प्रेम और चिंता बहुत स्पष्ट दिखाई दिये।

यूरोपीय सेमिनार १८ से २३ दिसम्बर, २०१०

बर्फीले तुफान के बावजूद, जिसकी वजह से अधिकांश प्रमुख यूरोपीय हवाई अड्डे बंद करने पड़े, १२०० से अधिक अभ्यासी १८ दिसम्बर तक गुरुदेव के चरणों में उपस्थित होने में कामयाब हो गए।

सभी लोगों को स्वयं से रूबरू होने और मानवता के लिए भविष्य में बदलाव कैसे लाया जा सकता है इस पर मंथन करने के लिए आमंत्रित करके गुरुदेव ने इस प्रकार के पहले सेमिनार को गति प्रदान की :

"यह सेमिनार आप सब को दूसरे लोगों के साथ व्यर्थ गपशप करने की बजाय वास्तविक मुद्दों पर गंभीर चिन्तन करने का अवसर देगा। आप स्वयं बैठकर मंथन करके सच्चे मन से गहन चिन्तन करते हुए अपने दिल से आने वाले उत्तर को स्वीकार करने की तत्परता के साथ इस अवसर का उपयोग करें।"

गुरुदेव के आग्रह के अनुसार कार्यक्रम में तत्काल समायोजन किया गया। सेमिनार के मुख्य कार्य के रूप मे शांत चित्त से मंथन करने के लिए कुछ पलों का प्रस्ताव किया।

इन शांत चिन्तन पलों तथा प्रतिदिन ३ सत्संगों के अलावा गुरुदेव ने अपनी ओर से चयनित विषयों पर वार्ता देने के लिए सीमित मात्रा में वक्ताओं का चयन भी किया। भाई बी. चक्रपाणी ने 'जीवन सागर', भाई पी. आर. कृष्णा ने 'गुरुदेव और मैं', भाई के.एस.बालासुब्रमनियन ने 'गुरुदेव और अनुशासन' तथा भाई कमलेश पटेल ने 'वास्तविक अभ्यास' विषयों पर वार्ता दी।

हालांकि गुरुदेव भौतिक रूप से सत्रों में शामिल नहीं रहे, उन्होंने अपने टी.वी. से जुड़ी वीडियो प्रसारण प्रणाली की सहायता से अपने कमरे से सभी भाषणों को देखा। गुरुदेव ने सेमिनार में औपचारिक समागमों और अपने कॉटेज में अनौपचारिक समागमों के दौरान अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपने अतुल्य अंदाज़ में गंभीर विषयों का समापन किया, यहां तक कि गृहस्थ जीवन और यौन से जुड़े सामान्य वर्जित परम्पराओं को भी चुनौती दी।

उन्होंने बर्लिन आश्रम के मौजूदा परिसर के भीतर यूरोप में प्रथम 'क्रेस्ट' (CREST) की स्थापना की घोषणा की और प्रस्ताव किया कि बसंत २०११ के दौरान 'मानव क्या है या कौन है' इस विषय पर प्रथम सत्र युवा अभ्यासियों के लिए आयोजित किया जाए। उन्होंने वर्दसेंडे आश्रम, डेनमार्क में यूरोप के प्रथम रिट्रीट सेंटर की भी घोषणा की।

अपनी समापन वार्ता में उन्होंने प्रतिभागियों को अपने भीतर 'जीवन आनंद' का सृजन करने का आमंत्रण दिया और उन्हें इस अवस्था के साथ अपने घर लौटने और यूरोप को अब भारत का अंग मानने की भावना के साथ विदा किया।

नये प्रकाशन

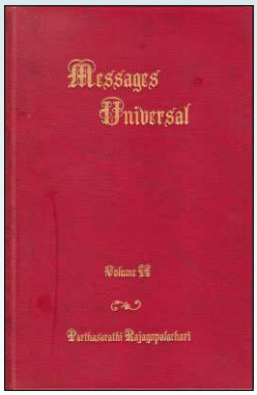

वैश्विक सन्देश
(सख्त कवर सहित)

वैश्विक सन्देश

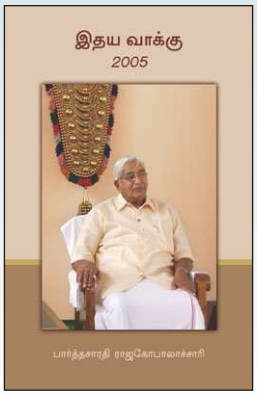

हृदय की आवाज़ २००५
(तमिल में)

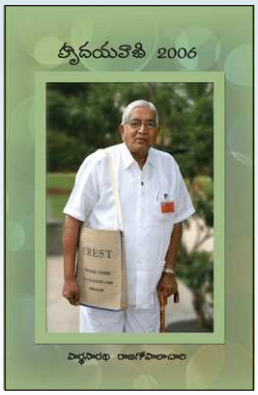

हृदय की आवाज़ २००६
(तेलुगु में)

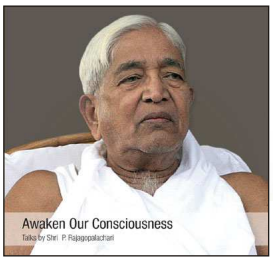

अवेकन अवर कॉन्शसनेस
(हमारी चेतना शक्ति को जगाओ)
डी वी डी अंग्रेज़ी

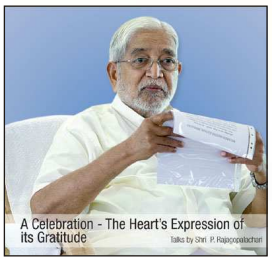

ए सेलीब्रेशन– द हार्ट्स एक्सप्रेशन ऑफ ईट्स ग्रेटिट्युड
(एक उत्सव– हृदय से कृतज्ञता को व्यक्त करना) – डी वी डी अंग्रेज़ी

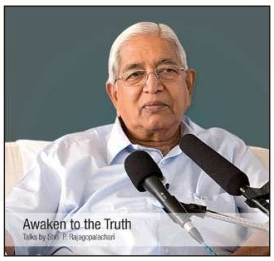

अवेकन टु ट्रुथ
(सच्चाई के प्रति जागो) – डी वी डी अंग्रेज़ी

सभी डी वी डी अंग्रेज़ी, फ्रेन्च, स्पैनिष, जर्मन, इटैलियन, रूसी, तमिल, तेलुगु, हिन्दी एवं कन्नड़ भाषा में सब–टाईटिल के साथ उपलब्ध हैं।

निवेदन

क्रेस्ट – बर्लिन, जर्मनी

सहज मार्ग स्पिरिचुॲलिटी फ़ौन्डेशन का बर्लिन में जो परिसर है उसे गुरुदेव ने यूरोप का संशोधन, शिक्षा, साधना एवं प्रशिक्षण केन्द्र (क्रेस्ट) घोषित किया है। उन्होंने भाई क्रिस्टियान मेकेटान्ज़ को इस संस्था का डाइरेक्टर नियुक्त किया है।

सत्खोल आवेदन पत्र – २०११ वर्ष के बसन्तकालीन वृन्दों के लिये

सत्खोल के २०११ वर्ष के आवेदन पत्र निम्न पते पर कम्प्यूटर द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं
http://www.sahajmarg.org/smww/satkhol/application-guidelines
कृपया मार्गदर्शक सुचनाओं का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद ही आवेदन पत्र भरें।

जिनके पास इन्टरनेट की सुविधा न हो, वे कृपया अपने प्रशिक्षक, केन्द्र प्रभारी या क्षेत्र प्रभारी की सहायता लें। अगर कोई प्रश्न हों तो सत्खोल के कार्यालय से दूर्भाष नम्बर ०४४ २२५२ १०९९ या ०४४ ४२१७ ११११ एक्स्टेन्शन २१८ पर सम्पर्क करें।

अतीत की एक झलक

बाबूजी के ८५ वे जन्मदिवस का उत्सव, चेन्नै, १९८४

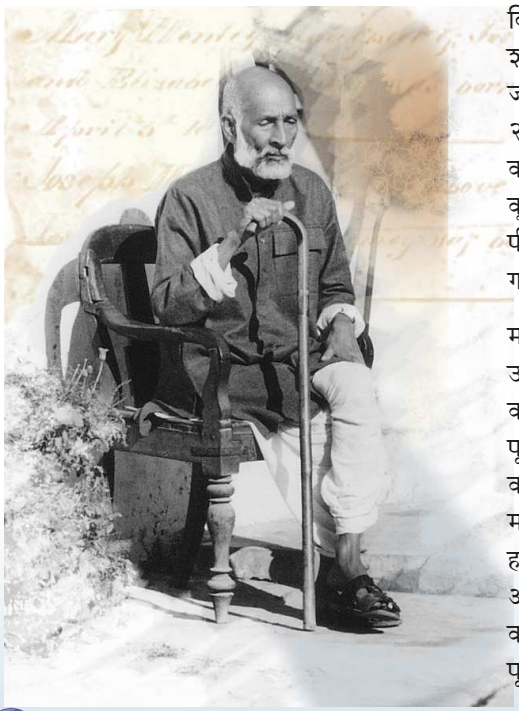

बाबूजी की महासमाधि के बाद जो पहला बड़ा समारोह हुआ, वह उनके जन्मदिवस का उत्सव था जिसमें देश–विदेश के ३५०० से भी ज़्यादा अभ्यासियोंने भाग लिया। समारोह का स्थान चेन्नै में वडापलानी में 'विजया शीशमहल' था। वहीं पास के कल्याण मंडपम (विवाह–गृह) में अभ्यासीयों के ठहरने की व्यवस्था की गयी थी जहाँ से उन्हें हररोज समारोह स्थल पर आने जाने के लिए गाड़ियों की व्यवस्था की गयी थी। उत्सव का शुभारंभ २९ अप्रैल को हुआ। और समापन १ मई को। प्रतिदिन सुबह और शाम का सत्संग मालिक़ ने कराया। उत्सव के हर कार्य में उन्होने पूरी लगन के साथ भाग लिया। उनकी पत्नी बहन सुलोचना ने उत्साहपूर्वक उनका साथ दिया। उनकी कृपा से उत्सव का वातावरण दिव्यता, उल्हास, प्यार और भ्रातृत्व की भावना से सरबोर था। मालिक़ के पिताजी श्री पी. ए. राजगोपालचारी भी पूरे उत्सव के दौरान मौजूद थे। उत्सव के दौरान एक छोटी पुस्तिका का विमोचन किया गया जिसमें पूज्य बाबूजी के संदेशोंका संग्रह था।

मालिक ने भविष्य के प्रति जिम्मेदारी कहकर एक संदेश दिया जिसमे बाबूजी ने हमारे लिए जो सपना देखा था उसकी हमें याद दिलायी और कहा की हमारा फ़र्ज बनता है कि बाबूजी ने जो लक्ष्य हमारे सामने रखा है उसे प्राप्त कर हम उनका सपना साकार करें। मिशन के इस ऐतिहासिक संदेश में वे हमें याद दिलाते हैं कि यह कार्य अवश्य पूरा होगा क्योंकी ऐसी 'उनकी' इच्छा थी। परिवर्तन को टाला नही जा सकता, यह बात हमारे दिल में आशा पैदा करती है और हमे वैसा बनाने का भरोसा दिलाती है जैसा 'वे' हमें बनाना चाहते थे। आनेवाले हजारों साल तक मानव जाति की अध्यात्मिक सेवा करने के लिए जो अध्यात्मिक धरोहर हमें सौंपी गयी है यह एक पावन निष्ठा है जो हमें कायम रखनी है और तमाम दुनिया के अध्यात्मिक जिज्ञासुओंको पीढी दर पीढी, बिना उसमें कुछ मिलाए, शुद्ध और असली रूप में हस्तांतरित करते जाना है। अंत में उन्होने हमसे बिनती की कि हम उस आवाहन उस आदेश का पालन करने में जुट जायें। उठो, जागो और जबतक तुम्हें सौंपी गयी यह दिव्य जिम्मेदारी उनके मन मुताबिक पूरी नही होती, चैन न लो।

(उपर लिखी पंक्तियां 'ॲन्ड ही मार्चेस ऑन' यह २४ जुलै २००७ को प्रकाशित विशेष आवृत्ती से हैं)

नए प्रकाश केंद्र

उदमलपेट

सन १९९० के अप्रैल में उदमलपेट में केंद्र की शुरुआत की गयी। अब वहाँ पर ३ प्रशिक्षक और १५० अभ्यासी हैं। उदमलपेट का आश्रम राजवूर में स्थित है जो बहुत ही सुंदर और शांत है। मालिक़ ने इसका नाम 'शांती आश्रम' रखा है। यह शहर से लगभग ६ किलोमीटर दूर है।

एक साल पहले मालिक़ के ऑफ़िस का उद्घाटन किया गया था और आश्रम के जमीन का पंजीकरण किया गया था। लगभग ५ एकड़ ज़मीन आश्रम परिसर के निमित्त रखी गयी और आठ एकड़ ज़मीन में अभ्यासीयों के लिए प्लॉट काटे गये।

इस आश्रम में ५ दिसंबर २०१० को भाई एन. प्रकाश द्वारा पहला सत्संग कराया गया जिसमें लगभग ७५ अभ्यासी उपस्थित थे। ध्यान कक्ष की लंबाई ६० फ़ीट और चौडाई ४० फ़ीट है जिसमें लगभग ३०० अभ्यासी बैठ सकते हैं।

दिंडीगुल

इस केंद्र की शुरुवात मार्च १९९१ में हुई थी और एक अभ्यासी बहन के घर पर सत्संग हुआ करता था। जब अभ्यासीयोंकी संख्या बढ गयी तो रविवार का सत्संग अमला देवी अस्पताल में होने लगा। दो साल पहले वाथापराय में आश्रम के लिए ज़मीन खरीदी गयी जो शहर से १५ किलोमीटर दूर स्थित है। वाथापराय में और उसके चारों तरफ़ जूही और नारियल के ढेरों पेड है। आश्रम वथ्लांकुंडु मार्ग पर स्थित है जो तमिलनाडू के बहुत ही खूबसूरत इलाक़े, कोडाईकॅनाल, के रास्ते में है।

तक़रीबन दो साल तक जब नया ध्यान कक्ष बन रहा था, आश्रम की अस्थायी कुटिया में सत्संग का आयोजन हुआ करता था। ध्यान कक्ष की लंबाई ६० फ़ीट और चौडाई ४० फ़ीट है जिसमें लगभग ३०० अभ्यासी बैठ सकते हैं। ५ दिसंबर २०१० से मालिक़ ने नये ध्यान कक्ष में सत्संग कराने की अनुमति दे दी और भाई विश्वनाथ राव ने लगभग ५० अभ्यासियों के लिए पहला सत्संग कराया। दोपहर एक बजे भाई एन. प्रकाश ने दूसरा सत्संग कराया। महिने का पहला रविवार होने की वजह से पूर दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। बहुत से भाई बहनोंने उस दिन के विषय 'दिल की आवाज़' के संदर्भ में चर्चा की और उसी विषय से संबंधित अपने कुछ अनुभव सुनाये। यह एक बडा ही मंगलमय शुभारंभ था और दिनभर का एक प्रभावकारी कार्यक्रम भी।

तिरुवन्नमलई, तमिलनाडू

चेन्नै से तकरीबन १८५ किलोमीटर दूर एक नया प्रकाश केंद्र उभरा है। दस साल पहले कन्नमंगल के भाई वेरू द्वारा इस केंद्र की स्थापना की गयी थी जो प्रशिक्षक थे और यहाँ पूजा करने आया करते थे। पर इसका विकास बहुत धीमी गती से हो रहा था। मालिक़ द्वारा ध्यान कक्ष बनाने की अनुमति मिलने पर बहुत ही थोडे समय में निर्माण कार्य पूरा हो गया।

१४ नवंबर को ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया गया। तमिलनाडू के क्षेत्रीय प्रभारी भाई एस प्रकाश और आसपास के अभ्यासीगण उद्घाटन में शमिल हुए। कक्ष से दिखाई देनेवाला पहाड़ का शांत और रमणीय दृश्य मन को मोह लेता है।

भाई शण्मुग़म, भाई प्रकाश, भाई लक्ष्मीनारायण, भाई तिरुनावुक्कारसु की वार्ताएँ हुईं। भाई श्रीरमण की वार्तासे समारोह का समापन हुआ।

गुलबर्गा आश्रम प्रकल्प

गुलबर्गा आश्रम ने नए आश्रम और अभ्यासी कॉलोनी बनाने की योजना के अंतर्गत ३४ एकड़ ज़मीन खरीदी है। मालिक ने १६ नवंबर को आश्रम और कॉलोनी का नक्शा पारित कर दिया है। मालिक ने नये बनने वाले आश्रम का नाम 'बाबूजी मेमोरियल आश्रम, गुलबर्गा' और आवासीय कॉलोनी का नाम 'योग जीवन एन्क्लेव' रखा है। यह ज़मीन वर्तमान आश्रम से करीब साढे सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

जनवरी २०११ भाग ४, अंक १
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया समाचार–पत्र

इन्दौर आश्रम के लिये ज़मीन

पूज्य गुरुदेव ने इन्दौर केन्द्र को ३० एकड़ के एक बड़े यानि कि एक 'मेगा प्रोजेक्ट' से धन्य किया है। नये आश्रम की ज़मीन वर्तमान आश्रम से १२ कि. मी. की दूरी पर है। नये आश्रम स्थल पर १४ नवम्बर को एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग ६०० भाई–बहनों ने हिस्सा लिया।

नया केन्द्र – परलाखेमुण्डी, उड़ीसा

नवम्बर २०१० में उड़ीसा ज़ोन में परलाखेमुण्डी (गजपति ज़िला) में नये केन्द्र की शुरुआत हुयी। परलाखेमुण्डी राजसीय संपत्ति हुआ करती थी और यह परलाखेमुण्डी के भौगोलिक मध्य से पाँच कि.मी. के घेरे में रची गयी है।

इस केन्द्र में दो वर्गों में १९ अभ्यासियों ने साधना प्रारंभ की। चूंकि इस केन्द्र में अभी कोई प्रशिक्षक नहीं है, पास के केन्द्रों के प्रशिक्षक यहाँ के अभ्यासियों को सेवा प्रदान करेंगे। फिलहाल भाई संतोष साहू (फ़ोन नं – ०९९३७०८०७०७) इस केन्द्र की गतिविधियो को संयोजित कर रहे हैं। यह उड़ीसा ज़ोने का बीसवां केन्द्र है।

हासन केन्द्र की दसवीं वर्षगाँठ

हासन केन्द्र में ५ दिसंबर, २०१० को केन्द्र स्थापना की दसवीं वर्षगाँठ के उत्सव में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। पास के चिकमंगलूर, तिपतुर, बैंगलोर और मैसूर जैसे केन्द्रों के अभ्यासियों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह के सतसंग से हुई, जिसके बाद अभ्यासियों ने विभिन्न विषयों पर भाषण दिये, जैसे "अभ्यासी की भूमिका", "दस नियम", "सहज मार्ग पद्धति और इसकी सरलता" और "सहज मार्ग के मूल तत्व"। दोपहर के भोजन के बाद एक प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया, जिसके माध्यम से अभ्यासियों को साधना के संदर्भ में शंकाओं एवं प्रश्नों पर स्पष्टीकरण मिला। वक्ताओं ने गुरु की मुश्किलों और उसके द्वारा अभ्यासियों के लिये दिये गये बलिदानों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन शाम के सतसंग से हुआ।

गृह संमेलन

थेनी केन्द्र, तमिलनाडु

बोदीनायकनूर और कम्बम केन्द्रों में २३ अक्तूबर, २०१० को स्थानीय सभाएँ आयोजित की गई। भाई आर. सुंदरम और बहन शुभश्री श्रीनिवासन द्वारा आयोजित इन सभाओं में तमिलनाडु (दक्षिण) के ज़ोन प्रभारी भाई विश्वनाथ राव ने हिस्सा लिया। बोदीनायकनूर की सभा आश्चर्यपूर्ण रही क्योंकि अनेक अभ्यासी, जो कई वर्षों से अभ्यास छोड़ चुके थे, आये और उन्होंने नियमित साधना करने का आश्वासन दिया।

कम्बम में लगभग ४० अभ्यासी मुन्नार पहाड़ियों के तले एक अभ्यासी भाई के निवास पर एकत्रित हुये। भाई सुंदरम ने आमंत्रितगणों को मिशन का परिचय दिया।

हैदराबाद

अनेक उप–केन्द्रों में साप्ताहिक या मासिक घरेलू सभाएँ आयोजित की जा रही है। यह सभाएँ वर्तमान अभ्यासियों तथा साधना में रूचि रखने वालों – दोनों के लिये नियत है। वर्तमान अभ्यासियों के लिये इन सभाओं का उद्देश्य है कि अभ्यासी आध्यात्मिक रुप से खुले, सहज मार्ग के तीन 'एम' (M) के बारे में उनकी जागरुकता गहरी हो और परिवार का हिस्सा होने की भावना जागृत हो।

आध्यात्मिकता में रुचि रखने वाले पड़ोसीयों और मित्रों को आमंत्रित किया जाता है और सहज मार्ग साधना के बारे में बताया जाता है। अनौपचारिक और संवादात्मक सत्र प्रतिभागियों को खुलकर बात करने में सहायक है।

हैदराबाद के मलकजगिरी केन्द्र में लगभग ३० अभ्यासी पिछले कुछ सप्ताहों से हर शनिवार को एकत्रित होते हैं और साधना के विभिन्न पहलूओं पर विचार करते हैं। यह पाया गया कि हर अभ्यासी खुलने की कोशिश कर रहा है और साधना को अधिकाधिक उत्साह और सहभागिता से कर रहा है।

पारिवारिक मेल–मिलाप – अंगुल, उड़ीसा

अंगुल केन्द्र में ९ दिसंबर, २०१० को एक अनौपचारिक मेल–मिलाप कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य अभ्यासियों के परिवारों में गहरा संबंध करने का था। यह सत्र अनौपचारिक होते हुये भी जीवन के आध्यात्मिक पहलुओं पर केन्द्रित था। प्रतिभागियों ने आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिये अपने विचार, अनुभव और सुझाव रखे। इस कार्यक्रम के माध्यम से केन्द्र को उपयोगी सुझाव मिले जिससे केन्द्र में विकास हो और कैसे अभ्यासियों को इस कार्य में सम्मिलित किया जाये। अभ्यासियों ने निश्चय किया कि इस तरह के सत्र कम से कम दो महीने में एक बार आयोजित किये जाये जिससे वे केन्द्र के विकास में और गतिविधियों के आयोजन में सहायता प्रदान कर सके।

समन्वयकों का समारोह, सूरत

१२ दिसंबर के दिन सूरत केंद्र ने समन्वयकों के लिये एक दिवसीय क्षेत्रीय समारोह का आयोजन किया। इसका ध्येय था, घरों में आयोजित की जाने वाली सभायें, खुली सभायें, वी.बी.एस.ई, निबंधलेखन प्रतियोगिता, उपकेंद्रों का विकास इत्यादि पर चर्चा एवं स्पष्टीकरण। दक्षिण क्षेत्र से विभिन्न केंद्रों से आये हुए लगभग ८४ समन्वयकों ने इस समारोह में भाग लिया।

क्षेत्रीय प्रभारी भाई हिरेन शाह ने सबका स्वागत किया। समारोह के वक्ता थे भाई सुरेश राजगोपालन, भाई सुरेन्द्र अगरवाल, बहन सौम्या राजगोपालन, बहन विभा राठोड एवं भाई विलास भोंडे।

अन्ध विश्वास एवं आध्यात्मिक विकास पर चर्चा जयपुर (आन्ध्र प्रदेश)

दिनांक ३१ अक्तूबर को जयपुर केन्द्र के अभ्यासियों ने "अन्ध विश्वास एवं आध्यात्मिक विकास " इस विषय पर चर्चा की। कई लोगों ने अपनी पुरानी धारणाओं के कारण हुई परिस्थितियों के बारे में बताया और गुरुदेव की मदद से उनसे बचने की उम्मीद प्रकट की। कुछ नये अभ्यासियों ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि यह कैसे संभव होगा। कुछ अनुभवी अभ्यासियों ने समझाया कि केवल गुरुदेव पर श्रद्धा एवं नियमित साधना से गुरुदेव के पास कोई खुल सकता है। इसके बाद मिशन की किताबों के बारे में एक चर्चा हुई, खासकर "व्हिस्पर्स फ्रॉम ब्राईटर वर्ल्ड"। चर्चा के दौरान सभी अभ्यासियों को गुरुदेव के प्यार और मार्गदर्शन का एहसास हुआ।

अध्यात्मिक रिट्रीट, अहमदाबाद

दिवाली के अवकाश के आसपास अहमदाबाद केन्द्र में, ६ दिवसीय रिट्रीट कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुजरात के विविध केन्द्रों के लगभग १२५ अभ्यासीगण ने इसका लाभ उठाया और वे योगाश्रम में ठहरे। हर दिन दो सत्संग होते थे और नियमित कार्यक्रम के अनुसार योग के सत्र, डीवीडी के प्रदर्शन, व्यक्तिगत सिट्टिंग, सुनहरा मौन इत्यादि कार्यक्रम चलाये गये। प्रातिभागियो ने स्वयं सेवकों का कार्य सराहनीय रूप से किया। भाई सुरेश राजगोपालन ने साधना संबन्धी स्पष्टीकरण पर वाद संवाद का लघु सत्र रखा जिसके बाद प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रहा। भाई धर्मेश एवं बहन कस्तूरी ने वी.बी.एस.ई. का एक लघु सत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र के दरम्यान कुछ लोगों की साधना शुरू करवाई गयी।

प्रकाशन से संबन्धित लोगों के लिये संगोष्टि (दक्षिण कर्नाटक)

दिनांक १८ और १९ दिसबंर को, मैसूर आश्रम में दो–दिवसीय प्रशिक्षण शिबिर आयोजित किया गया था जिसका उद्देश्य था दक्षिण कर्नाटका के स्वयं सेवकों को तालीम देना ताकि वे प्रकाशनों को सभी अभ्यासियों तक चुस्त एवं असरकारी रूप से पहुंचा सके। १५ केन्द्रों से ५४ अभ्यासियों ने भाग लिया। बिक्री, लेखाजोखा, पुस्तकों का हिसाब, नोंदणीकरण, प्रकाशनों का वितरण इत्यादी कार्यों की जानकारी सहभागियों को देना इस प्रशिक्षण शिबिर का उद्देश्य था।

नियमित रूप से ब्योरा लेने के लिये योजना बनाई गई है ताकि हर केन्द्र में प्रकशान विभाग सुचारु रूप से कार्य कर सके।

वडोदरा (गुजरात)

दिनांक २४ अक्तुबर को वडोदरा केन्द्र में एक खुली सभा का आयोजन किया गया। अभ्यासी स्वयं सेवकों के माध्यम से करीब १५०० निमंत्रण पत्र ओ.एन. जी. सी कोलोनी में और उसके इर्द गिर्द वितरित किये गये। कार्यक्रम की शुरुआत ओ.एन. जी. सी के ओडिटोरियम में सुबह ७.३० बजे अभ्यासियों के सत्संग से हुई। अभ्यासियों द्वारा निमन्त्रित किये गये अतिथिगण १० बजे से आने लगे। पहला सत्र था "आध्यात्मिकता क्यों" जिसका उद्देश्य था संतुलित जीवन की ज़रूरत पर ज़ोर देना था। भाई कमलेश पटेल ने सहज मार्ग का परिचय दिया। उन्होंने सब को आध्यात्मिक यात्रा में सम्मिलित होने का आग्रह किया। आगन्तुक अतिथियों ने सभी भाषणों को ध्यान से सुना। चाय के अन्तराल में कुछ अतिथियों ने, जो साधना आरम्भ करने के लिये उत्सुक थे, प्रशिक्षकों से प्रश्न पूछे। आश्रमों के स्थान दर्शाते हुए नक्शे वितरित किये गये और साथ साथ प्रशिक्षकों के विवरण। १७० आगन्तुक अतिथियों में से ८० जनों ने साधना आरम्भ करने में उत्सुकता दिखायी और कईयों ने पहली सिटिंग भी ली।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया समाचार–पत्र

पूरे दिन का कार्यक्रम

चिन्नवल्लिकुलम आश्रम, विरुधुनगर, तमिलनाडु

३१ अक्तूबर २०१० को विरुधुनगर में चिन्नवल्लिकुलम में पूरे दिन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विरुधुनगर, कोविलपट्टी और करियापट्टी केन्द्रों से लगभग ४४ अभ्यासियों ने भाग लिया था। सुबह के सत्संग के बाद 'चरित्र निर्माण' और 'आचरण और चरित्र' विषयों पर मालिक की वार्ता का विडियो चलाया गया। अभ्यासियों ने चर्चा और प्रश्नोत्तर सत्र में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मदुरई आश्रम, तमिलनाडु

३१ अक्तूबर के कार्यक्रम में मदुरई और आसपास के अनेक केन्द्रों से लगभग ५०० अभ्यासियों ने भाग लिया। भाई पलनिअप्पन ने एक परिचय वार्ता दी और सभी अभ्यासियों से मालिक की वार्ता ध्यान से सुनने और अपने दिल में उतारने और आध्यात्मिक वातावरण का आनन्द लेने के लिये कहा। बहन ए. शांताकुमारी ने 'सहज मार्ग के मूल सिद्धान्त', बहन एस. पलनिअम्माल ने 'साधना', बहन ए. जी. थंगम ने 'दस उसूल और उनकी जीवन में भूमिका' और बहन लता शिवरामन ने 'आध्यात्मिक बदलाव' पर वार्ता दी। भाई पी पलनिअप्पन ने ९ अक्तूबर को मनपाक्कम आश्रम में 'परम चरित्र' विषय पर मालिक द्वारा दी गई वार्ता पर चर्चा की। कार्यक्रम का समापन सत्संग से हुआ, जिसने विचारों को मजबूत करने का काम किया।

१४ नवम्बर को क्षेत्र प्रभारी भाई टी वी विश्वनाथ राव, पाठ्य क्षेत्र के उदघाटन के लिये मदुरई आश्रम आये थे। रविवार के सत्संग के बाद, जिसमें ५०० से अधिक अभ्यासियों ने भाग लिया, वे चरित्र निर्माण पर बोले और इस बात पर दबाव डाला कि आध्यात्मिक मनुष्य को गुरुदेव द्वारा दी गई प्राणाहुती के बाद हुए परिवर्तन को दर्शानेवाला आचरण करना चाहिये। पाठ्य क्षेत्र की छत ह ॠ ड से प्राप्त ॠ ल ल्ण्ज्ज्ळ्ल से बनी है जहाँ पर बाल दिवस मनाया गया और कुछ बच्चों के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। लगभग ७० बच्चों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

हरदोई, उत्तर प्रदेश

५ दिसम्बर २०१० को हरदोई केन्द्र में सामुहिक चर्चा का आयोजन किया गया। अनेक अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसका संचालन भाई संजय ने किया था। चर्चा का विषय 'अभ्यासी का आध्यात्मिक उत्थान' था। समूहों के सदस्यों ने चर्चा के दौरान बडी ही दक्षता के साथ सभी बातोंको संक्षिप्त रूप में लिख लिया। प्रत्येक समूह ने उनकी चर्चा के सार सहित कुछ मिनट की संक्षिप्त वार्ता दी। सत्र का समापन करते हुए भाई संजय ने सभी प्रत्याशियों को दिल को छू लेने वाले इस सत्र, जिसमें ऐसा लगा मानो ह्रुदय भाईचारे और मालिक के लिये प्रेम से भर गया हो, में भाग लेने के लिये धन्यवाद दिया।

रामनाथपुरम

२१ नवम्बर को रामनाथपुरम में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें रामनाथपुरम, परमकुडि, मानामदुरई और शिवगंगई केन्द्रों से प्रशिक्षक सहित लगभग ४० अभ्यासियों ने भाग लिया। चर्चा का विषय था 'सहज मार्ग के अभ्यासी के रूप में हमें किस चीज पर गर्व महसूस करना चाहिये?'। इस चर्चा के बाद 'आध्यात्मिकता का महत्व' पर मालिक की वार्ता का वीडीओ चलाया गया।

शिवगंगई

२८ नवम्बर को इस केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में शिवगंगई, मानामदुरई, परमकुडि, रामनाथपुरम और मदुरई केन्द्रों से लगभग ९० अभ्यासियों ने भाग लिया। मालिक के कहे अनुसार ' यदि आप सहज मार्ग को ठीक से नहीं समझते हो तो आप सहज मार्ग का ठीक से अभ्यास नहीं कर सकते हो' कार्यक्रम में निम्न विषयों पर चर्चा की गयी– "ध्यान क्या है", " ध्यान का महत्व", "सहज मार्ग ध्यान", "ध्यान के लाभ" आदि।

शिवगंगई

विरुधुनगर

हरदोई

तिरुप्पूर में पूर्णदिवसीय कार्यक्रम

दिनांक १२ दिसम्बर को तिरुप्पूर के डी.जे. पार्क में पूर्ण-दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। रविवार के सत्संग के पश्चात क्षेत्र प्रभारी भाई टी.वी. विश्वनाथ राव ने प्रारम्भिक वार्ता दी जिसमें उन्होंने गुरुदेव के एशियाई सेमिनार के दरम्यान दिये गये 'करो या मरो' शीर्षक की वार्ता से कई कथनों का ज़िक्र किया।

पूर्ण-दिवसीय कार्यक्रम का विषय था 'चरित्र निर्माण'। भाई आर. सुन्दरम ने प्रारम्भिक वार्ता दी। वक्ताओं ने चरित्र निर्माण के मूल मुद्दों के बारे में सविस्तार बताया। भाग लेनेवाले अभ्यासियों को यह कार्यक्रम अत्यन्त उपयोगी लगा।

बन्सवाडा, निज़ामाबाद के छात्रों को सम्बोधित करना

दिनांक ११ दिसम्बर को बन्सवाडा, निज़ामाबाद के 'श्री कृष्णवेणी टॅलेंट' स्कूल, के छात्रों के लिये 'मूल्य एवं आध्यात्मिकता' शीर्षक पर एक वार्ता दी गई। बच्चों के लिये आयोजित सरल खेलों के ज़रिये समन्वय का एहसास हुआ। पहली कक्षा से नव्वीं कक्षा तक के १६ शिक्षकगण एवं ४०० छात्रों ने भाग लिया।

बन्सवाडा के कीर्ति जूनियर कालेज ने भी मिशन से अनुरोध किया कि उनके अण्डर-ग्रेजुएट छात्रों के लिये इस तरह का कार्यक्रम आयोजित करें। बीस शिक्षकगण एवं १०० से अधिक छात्रों ने विचार-विनिमय के कार्यक्रम में भाग लिया। सरल प्रयोगों द्वारा जीवन में संतुलन की आवश्यकता, मानव मूल्य और आध्यात्मिकता के बारे में समझाया गया।

सहज मार्ग के सैनिक (कर्नाटक)

तमिल नाडु के नाट्रंपल्लि आश्रम में दिनांक १३ और १४ नवंबर को दक्षिण कर्नाटक के ४७ अभ्यासियों के लिये "सहज मार्ग के सैनिक" इस विषय पर दो-दिवसीय शिबिर आयोजित किया गया।

इस शिबिर की प्रेरणा अप्रेल २००४ में बैंगलूरु में गुरुदेव द्वारा दिये गये भाषण "आध्यात्मिकता के सैनिक" से मिली। उन्होंने उस भाषण में कहा था, "तो उसके लिये तैयार रहो; यह कठिन है, लेकिन हमें आध्यात्मिकता के सैनिक चाहिये। .. .. हम अपने ही संस्कारों को, बुरे आचरण एवं नकारात्मक विचारों को नष्ट करते हैं। इसलिये हम अपने ही भीतर से एक दिव्य इनसान बनकर निकलते हैं"।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य था उत्साह पैदा करना और दक्षिण कर्नाटक में एक सशक्त स्वयं-सेवक दल को तैयार करना जो सहज मार्ग के सिपाही या सैनिक के रुप में काम करे।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत ५ वाद-संवाद के सत्र थे, जिनके विषय थे - सहज मार्ग जीवन प्रणाली, उदाहरण बनना, परिणामकारक स्वयं सेवा, एक अभ्यासी का व्यक्तिमत्व और सही सहज मार्ग साधना पद्धती।

जिन लोगों से एक अभ्यासी के आदर्श गुणों के बारे में विवरण देने के लिये कहा गया था उनका मानना था कि सहज मार्ग को एक सरल पद्धती बताया जाता है परन्तु मानव पूर्णता को पाना अत्यन्त कठिन है और इसके लिये अभ्यासियों को तल्लीन होना आवश्यक है। उन्होंने यह भी बताया कि इस कार्यक्रम से साधना की ओर उनकी धारणा बदल गयी है और अब वे साधना और अधिक नियमित रूप से करेंगे।

अभ्यासियों के लिये कार्यशाला - मैंगलोर

दिनंक १७ अक्तुबर को भाई मोहनदास ने मैंगलोर के ३२ अभ्यासियों के लिए एक समारोह आयोजित किया। चर्चा का विषय था "मेरे गुरुदेव, मेरी पद्धति, मेरा मिशन"। "जीवन में गुरु की आवश्यकता" पर डी.वी.डी प्रस्तुत की गई। उन्होंने 'सहज मार्ग के गुरु' पर भी प्रस्तुती दी और इन गुरुओं का मानव के विकास में योगदान इस विषय पर सविस्तार बताया जिसके बाद 'मेरी पद्धति' पर वार्ता दी। हमारी पद्धति के प्रमुख अंश समझाये गये। उन्होंने स्वयं सेवा पर ज़ोर दिया। 'गुरु और शिष्य' पर एक डी.वी.डी. प्रस्तुत की गई जिसके बाद विभिन्न विषयों पर परिचर्चा हुई। भाई मोहनदास ने चरित्र निर्माण पर ज़ोर देते हुए कहा कि हर अभ्यासी का कर्तव्य है कि वह अपने बाहरी बर्ताव में परिवर्तन लाये।

अपने समापन वार्ता में भाई राधाकृष्णन ने कहा कि यह समारोह हमें ३ 'एम' को समझने के लिये है ताकि हम मानव जीवन के ध्येय की ओर शीघ्र अति शीघ्र पहुंच सकें।

प्रकाश के केंद्र

करीमनगर आश्रम

आन्ध्र प्रदेश में करीमनगर आश्रम ज़िला मुख्यालय है और श्री राम चंद्र मिशन के सबसे पुराने केंद्रों में से एक है। इस व्यस्त शहर में दो आश्रम हैं। पुराने वाला शहर में स्थित है, मनकम्मा थोटा में और नया वाला शहर से लगभग १५ कि.मी. दूर हैदराबाद के लिए राजमार्ग (एन एच–७) पर स्थित है। करीमनगर में सहज मार्ग मार्च १९७५ में प्रकाश में आया। प्रारंभ में भाई एन.एस.राजू के निवास पर सत्संग आयोजित किए गए। ४,जुलाई,१९७९ को पूज्य बाबूजी महाराज ने एक स्थायी ध्यान कक्ष (मेडिटेशन हॉल) की अनुमति दे दी।

मनकम्मा थोटा में आश्रम

१९८० में, लगभग १००० वर्ग गज़ की जमीन खरीदी गयी और जनवरी १९८७ में मास्टर ने आश्रम भवन निर्माण की अनुमति दे दी। यह निर्माण १९९० में पूरा हुआ। ९ अक्टूबर, १९९१ को मास्टर ने आश्रम का उदघाटन किया। यह एक आरसीसी निर्माण है जो ९ गुंटा जमीन पर किया हुआ है। वहाँ एक ध्यान कक्ष (५०फ़ुट * ७० फ़ुट), एक रसोईघर, शौचालय खंड, पुस्तकालय जिसमें लगभग ५०० पुस्तकें, ऑडियो/विडियो सीडी/डीवीडी आदि निहित हैं और मास्टर के लिए एक अच्छी तरह से सुसज्जित कमरा है।

पार्थसारथीनगर में आश्रम

पार्थसारथीनगर के आश्रम और उसके चारों ओर उपनगर(टाउनशिप) का ५ अप्रैल २००४ को मास्टर द्वारा उदघाटन किया गया। कुल १६.५ एकड जमीन अधिग्रहण की गयी जिसमें से ४.५ एकड आश्रम के लिए समर्पित है।

आश्रम में एक ध्यान कक्ष(५०*६०) है जिसकी योग्यता लगभग ३०० अभ्यासियों को बैठाने की है, एक रसोईघर, भोजन कक्ष, एक पुस्तकालय और शौचालय खंड (ब्लॉक) हैं। वहाँ मास्टर के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित कमरों के समीप एक अतिथि कक्ष है।

मास्टर ने अपने उदघाटन भाषण में कहा, "हम हमारे घर में स्वर्ग/वैकुंठ चाहते हैं। यह हो सकता है, बशर्ते आप अपने दिल का विकास इस प्रकार से करें कि, आपके स्वर्ग में जाने के बजाय, स्वर्ग आपके घर में आ जाए। लेकिन वह आपके दिल पर निर्भर करता है। ऐसे दिल का विकास करने के लिए, आपको इस तरह के स्थान पर आना होगा।"

मास्टर पिछले कुछ वर्षों में कई बार करीमनगर गए – मार्च १९८७, फ़रवरी १९८९, अक्टूबर १९९१, दिसंबर १९९४, अक्टूबर १९९७, फ़रवरी २००२ और हाल ही में अप्रैल २००४ में । उन्होंने अपनी एक यात्रा में उल्लेख किया था कि करीमनगर उनके लिए "करीबनगर" है, अर्थात उनके दिल के करीब है। उन्होंने अपने दौरों के दौरान कई वार्ताएँ दीं जिनमें उन्होंने बीच बीच में तेलुगु भाषा का प्रयोग किया जिसका अभ्यासीयों को बहुत उत्सुकता से इन्तज़ार होता था।

यहाँ दो पूरे दिन के कार्यक्रमों का आयोजन होता है: एक तो माह के दूसरे रविवार को पार्थसारथीनगर आश्रम में और दूसरा माह के अंतिम रविवार को मनकम्मा थोटा आश्रम में। लगभग २५० अभ्यासी और ७० बच्चे नियमित रुप से इन मासिक समारोहों में भाग लेते हैं। आश्रमों में सभी गतिविधियाँ इस बात को ध्यान में रखते हुए की जाती हैं कि मास्टर ने एक बार क्या कहा," इसलिए, मुझे आशा है कि आप यहाँ आने और ध्यान की आवश्यकता को समझेंगे, ताकि दिल विकसित हो सके, ताकि सफ़ाई इसमें से सब स्थूलता हटा सके, इसे एक योग्य जगह बनाओं जिसमें कि मेरे मालिक आयें और हमेशा के लिए रहें।"

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.